

# मिश्रित संवेदना दिमाग का झरोखा है

**मि**श्रित संवेदना यानी सिनेस्थेशिया शब्द उस स्थिति के लिए उपयोग किया जाता है जब किसी व्यक्ति में एक संवेदना के साथ कोई दूसरी संवेदना अपरिहार्य रूप से जुड़ी हो। जैसे कुछ लोग होते हैं जिन्हें संख्या अथवा शब्दों के साथ रंगों की अनुभूति होती है। इन्हें रंग-चित्र सह-संवेदक या कलर-ग्रेफीम सिनेस्थेट कहते हैं। अब तक माना जाता था कि इस तरह की मिश्रित संवेदना स्वचालित होती है और मस्तिष्क में संवेदना-मार्गों के आपस में जुड़ जाने के कारण पैदा होती है। ताज़ा अनुसंधान से पता चला है कि सह-संवेदना की प्रक्रिया में दिमाग के 'उच्चतर' हिस्सों की भूमिका है। ये हिस्से भाषा से सम्बंधित हैं।

उदाहरण के लिए पहले किए गए एक प्रयोग में कुछ लोगों को '2' व '5' अंकों से बना एक पैटर्न दिखाया गया था। इनमें से किसी एक अंक से एक चित्र-पैटर्न बनता था। रंग-चित्र सह-संवेदक इस पैटर्न को काफी जल्दी पकड़ पाए थे। तब यह माना गया कि इन सह-संवेदकों में प्रत्येक अंक के साथ कोई रंग जुड़ा होता है जिसकी वजह से ये अंक उन्हें अलग-अलग रंगों के दिखाई पड़ते हैं और इसके चलते वे जैसे ही अंकों के इस जमावड़े को देखते हैं, पैटर्न तुरंत उभर आता है।

मगर ससेक्स विश्वविद्यालय के रैमी वार्ड और उनके साथियों द्वारा किए गए इसी तरह के अध्ययन ने पूरे मामले को एक नई रोशनी में रख दिया है। उन्होंने 36 रंग-चित्र सह-संवेदक और इतने ही सामान्य लोगों के साथ उक्त प्रयोग दोहराया। जब छिपा हुआ चित्र पहचानने को मात्र 1 सेकंड दिया गया तो सह-संवेदकों का प्रदर्शन कहीं बेहतर रहा। मगर वे भी मात्र 40 प्रतिशत मर्तबा ही चित्र को पहचान पाए। इसके बारे में पूछने पर एक सह-संवेदक ने बताया कि उसे अंकों के साथ रंग उन्हीं

हिस्सों में दिखाई देते हैं जिन पर वह नज़र गड़ाकर देखता है। एक अन्य सह-संवेदक का कहना था कि रंग तभी उभरते हैं जब वह उन संकेतों पर ध्यान दे।

वार्ड इन बातों की व्याख्या करते हुए बताते हैं कि सह-संवेदकों के सामने अंकों के रंग स्वतः नहीं उभरते। रंग तो तभी उभरते हैं जब वह अंक उनके फोकस के दायरे में हो। अतः होता यह है कि यदि वे लोग अंकों के जमावड़े के उस हिस्से को देखें जहां पैटर्न है, तो वह उन्हें आसानी से दिखता है। मगर यदि वे किसी भी हिस्से पर विशेष रूप से ध्यान न दें तो उनकी सफलता सामान्य लोगों जितनी ही रहती है। इसका अर्थ है कि सह-संवेदना कोई स्वचालित चीज़ नहीं है, इसके लिए सूचनाओं का प्रोसेसिंग करना होता है। यानी इसमें दिमाग के उच्चतर हिस्से शामिल होते हैं।

इसी तरह के एक अन्य प्रयोग के निष्कर्ष भी गौरतलब हैं। मैक्स प्लांक इंस्टीट्यूट फॉर ब्रेन रिसर्च के डैन्को निकोली और उनके साथियों ने कुछ सह-संवेदकों को अपनी भाषा के अक्षरों व अंकों का सम्बंध एक अनजानी लिपि के अक्षरों व अंकों से जोड़ना सिखाया। देखा गया कि इन लोगों ने अपनी मूल लिपि के रंग-चित्र सम्बंधों को नई अनजानी लिपि के संकेतों के साथ भी जोड़ लिया। यह क्रिया तो स्वचालित नहीं है बल्कि ये सह-संवेदनाएं अर्थ से जुड़ी हैं। इसका मतलब यह हुआ कि इसमें मस्तिष्क की उच्चतर प्रक्रियाएं शामिल होंगी।

वैसे सब लोग इस निष्कर्ष से सहमत नहीं हैं। जैसे मूल रूप से रंग-चित्र सह संवेदना का उक्त प्रयोग करने वाले हुबार्ड का कहना है कि सह-संवेदक लोग अक्षर को देखते ही अपने दिमाग के रंग संवेदना वाले हिस्से को इतनी जल्दी सक्रिय कर लेते हैं कि लगता नहीं कि कोई उच्चतर प्रोसेसिंग बीच में होती होगी। (स्रोत फीचर्स)